इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 का मक़ाम

मौलाना इम्तियाज़ हैदर साहब

विलादतः– 1 रजब 57 हि0

शहादतः– 7 ज़िलहिज्जा 114 हि0

फ़िक्री व अमली और दूसरी सलाहियतों के लेहाज़ से समाज की रहबरी का ऊँचा मक़ाम जो आप (अ0) को आपके बुज़ुर्ग बाप जनाबे सैय्यदे सज्जाद (अ0) की परवरिश के नतीजे में हासिल हुआ था, वही सबब बना कि आपके ज़माने के सभी साथी चाहे दोस्त हों या दुश्मन, आप (अ0) की क़द्र व मन्ज़िलत का एतेराफ करें।

इस जगह मुनासबत के लेहाज़ से इमाम बाक़िर (अ0) की शख़सियत के मुताल्लिक़ इस्लामी समाज के बुज़ुर्गों के कुछ अक़वाल मुलाहेज़ा फरमाएँ:

1– अब्दुल्लाह बिन अअ्ता मक्की कहते हैं: हमने अपने ज़माने के दानिश्वरों में किसी को नहीं देखा जो मुहम्मद बिन अली बाक़िर (अ0) के इल्म व समझ को सतही समझे।

2– मुहियुद्दीन बिन शरक़ा नूव्वी कहते हैं: आप (अ0) जलीलुलक़द्र ताबईन में से एक हैं। आप (अ0) अज़ीमुश्शान इमाम हैं जिनकी बुज़ुर्गी पर सभी मुत्तफिक़ हैं। आप (अ0) मदीने के ऊँचे फुक़हा में शुमार होते हैं। आप (अ0) ने जाबिर और अनस से बिना किसी वास्ते के रिवायत सुनी है। और अबुइस्हाक़, अता बिन अबु रबाह, अम्र बिन दीनार अअ्रजी अगरचे यह हज़रात आपसे कमसिन थे, ज़ोहरी, रबीआ और दूसरे ताबईन व दीनी बुज़ुर्गों के एक गिरोह ने आपसे रिवायत नक़ल की है। बुख़ारी व मुस्लिम और दूसरे लोगों ने भी आपके मुताल्लिक़ रिवायात बयान की हैं।

3– इब्ने इबाद हम्बली कहते हैं: अबुजाफर बिन मुहम्मद (अ0) मदीने के फुक़हा में से हैं। आपको बाक़िर कहा जाता है इसलिए कि आप (अ0) ने इल्म को शिगाफता किया है और उसकी हक़ीक़त व जौहर को पहचाना है।

4– मुहम्मद बिन तलहा शाफई कहते हैं: मुहम्मद बिन अली (अ0) दानिश को शिगाफ्ता करने वाले और तमाम उलूम के जामे हैं आपकी हिकमत आशकार और इल्म आपके ज़रिए सरबुलन्द है। आप (अ0) के सरचश्म–ए–वुजूद से समझ अता करने वाला दरया भरा है। आप (अ0) की हिकमत के लाल व गुहर ज़ेबा व दिलपज़ीर हैं। आप (अ0) का दिल साफ और अमल पाकीज़ा है। आप मुतमइन रूह और नेक अख़लाक़ के मालिक हैं। अपने वक़्तों को इबादते ख़ुदावन्दी में बसर करते हैं। परहेज़गारी में साबित क़दम है। बारगाहे परवरदिगार में मुक़र्रब और बुज़ुर्ग होने की अलामत आपकी पेशानी से झलक रही है। आप (अ0) के हुज़ूर में मनाक़िब व फज़ाएल एक दूसरे पर सबक़त हासिल करना चाहते हैं। नेक ख़सलतों और शराफत ने आप से इज़्ज़त पाई है।

5– इमादुद्दीन अबुल फिदा इस्माईल बिन अम्र बिन कसीर कहते हैं: अबुजाफर (बाक़िर अ0) बुज़ुर्ग व जलीलुलक़द्र ताबईन में से हैं। आप (अ0) इल्म व अमल और सरदारी व इज़्ज़त में इस उम्मत के मारूफ फर्द शुमार होते हैं। चूँकि आपने उलूम को शिगाफ्ता करके उससे अहकाम

हासिल किये। इसलिए आपको बाक़िर कहा जाता है। आप (अ0) ख़ुदा का ज़िक्र करने वाले, झुकने वाले और नर्म शख़्स थे। आप ख़ानदाने नुबुव्वत व नसब वाले घराने से थे और ख़तरों को जानते थे। और गिरया बहुत करते थे। जब्र व बहस और लैत व लअल से परहेज़ करते थे।

6– जाबिर बिन यज़ीद जाफी जब आप (अ0) से रिवायत नक़ल करना चाहते तो इस तरह बयान करतेः इस हदीस को वसी–ए–औसिया, वारिसे उलूमे अम्बिया मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन (अ0) ने हमारे लिए बयान फरमाया है।

मज़कूरा अक़वाल बुज़ुर्ग इस्लामी दानिश्वरों के इज़्हारे नज़र के कुछ हिस्से हैं जो आपके मक़ाम की बुलन्दी व अज़मत की तसरीह व ताकीद करते हैं। अगरचे इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की इल्मी, अमली, रूहानी शख़सियत और बज़ाते ख़ुद आपका लोगों के साथ सुलूक व बर्ताव और इल्म व तक़्वे के मैदान में आपका फ़ज़्ल व करम अवाम के मुख़तलिफ तबक़ों के एतेराफ करने का सबब बना। उसके बावजूद आसमानी दीने इस्लाम जो इस बात का एतेक़ाद रखता है कि सिवाए इमाम की ज़ात के कोई ऐसे किरदार का हामिल नहीं हो सकता। सिर्फ इतने ही पर बस नहीं करता बल्कि मोतबर हवालों के ज़रिए इमाम की पहचान भी करता है।

आम तौर से जब किसी अहम मज़हबी मन्सब के लिए किसी शख़्स को चुना जाता है तो इस्लामी शरीअत में सीधे उसकी पहचान करायी जाती है।

इसी के साथ इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिए कि जो नस इमाम को मुअय्यन करती है उसे लाज़मी तौर पर दीन के हक़ीक़ी नुमाइन्दे की तरफ से होना चाहिए न कि किसी और की तरफ से। जैसे ख़ुदा के रसूल (स0) या फिर उस इमाम की तरफ जिसकी फिक्र व अमल की पैरवी वाजिब क़रार दी गई हो।

इसलिए अगरचे इमाम बाक़िर (अ0) का अन्दाज़ व फिक्र और सुलूक एक शाइस्ता इमाम की ख़ुसूसियत का हामिल था लेकिन पिछले इमामों की तरह आप भी क़ानूनी तौर पर नुसूसे शरीआ से इमाम के लिए मन्सूब हुए। कुछ रिवायतें इस हक़ीक़त की हिकायत करती है जिन्हें आप ज़ेल में मुलाहेज़ा करेंगे।

1– जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी ने रसूले ख़ुदा से पूछाः वह इमाम जो अली बिन अबी तालिब (अ0) की नस्ल से होंगे वह कौन हैं? तो रसूले अकरम (स0) ने फरमायाः ''हसन व हुसैन (अ0) जन्नत के जवानों के सरदार हैं फिर उनके बाद अपने ज़माने के साबिरों के सरदार अली बिन हुसैन (अ0), उनके बाद बाक़िर यानी मुहम्मद बिन अली (अ0)। ऐ जाबिर तुम उनको देखों और उनकी ख़िदमत में पहुँचो तो हमारा सलाम कहो।''

2– जाबिर इब्ने यज़ीद जअ्फी कहते हैं हमने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी से इस तरह सुनाः जिस वक़्त ख़ुदावन्दे आलम ने इस आयत को अपने पैग़म्बर (स0) पर नाज़िल कियाः ''ऐ मामिनों ख़ुदा और उसके रसूल व साहेबाने अम्र की इताअत करो।'' तो रसूले अकरम (स0) से सवाल किया गयाः ख़ुदा और उसके रसूल को पहचान लिया लेकिन साहेबाने अम्र कि जिनकी इताअत ख़ुदा व रसूल की इताअत है, कौन लोग हैं? तो आप (स0) ने फरमायाः ''ऐ जाबिर वह हमारे जानशीन और मुसलमानों के इमाम हैं। उनमें से पहले अली

बिन अबी तालिब (अ0) फिर हसन (अ0) फिर हुसैन (अ0) फिर अली बिन हुसैन (अ0) फिर मुहम्मद बिन अली (अ0) ....हैं।''

3— इमामे सादिक़ (अ0) अपने बुज़ुर्ग बाप से नक़ल करते हैं: मैं जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी के पास गया। जिस वक़्त उनके घर में पहुँचा तो उन पर सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया। फिर उन्होंने पूछा आप कौन हैं? (जाबिर उस वक़्त नाबीना थे) हमने कहा मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन (अ0)। उन्होंने कहा: फरज़न्दे रसूल (स0)! नज़दीक आइये। मैं नज़दीक हुआ, मेरे हाथ का बोसा दिया, इसके बाद कहा: रसूले ख़ुदा (स0) ने आपको सलाम कहा था। हमने कहा: ख़ुदा की रहमत व बरकत आँहज़रत (स0) पर हो, माजरा क्या है?

उन्होंने कहा: एक दिन रसूले ख़ुदा (स0) के पास था। आप (स0) ने मुझ से फरमाया: ''ऐ जाबिर तुम इस क़द्र ज़िन्दा रहोगे कि मेरे एक फरज़न्द मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन (अ0) से मुलाक़ात करोगे। ख़ुदावन्दे आलम ने उसको नूर व हिकमत अता फरमाया है उसको मेरा सलाम कहना।''

4— उसमान बिन ख़ालिद अपने बाप से नक़ल करते हैं: अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब (अ0) कमज़ोरी की वजह से लेटे हुए थे और अपने फरज़न्द मुहम्मद, हसन, अब्दुल्लाह, उमर, ज़ैद और हुसैन को इकटठा किया और उनसे वसिय्यत फरमाई कि मेरे जानशीन मुहम्मद (अ0) हैं। आपकी कुनियत बाक़िर क़रार दी और सबकी इमामत व रहबरी आपके हवाले की।

5— मालिक बिन अअ्यन जहनी कहते हैं: अली बिन हुसैन (अ0) ने अपने फरज़न्द मुहम्मद बिन अली से वसिय्यत फरमाई: ''ऐ मेरे बेटे तुम्हें अपना जानशीन बनाया, तेरे सिवा जो भी दावा करे कि मेरा जानशीन है ख़ुदावन्दे आलम क़यामत के दिन आग का एक तौक़ उसकी गर्दन में डाल देगा। ख़ुदा का शुक्र करो और उसका शुक्रे नेमत बजा लाओ इसलिए कि जब तक शुक्र करोगे नेमत बाक़ी रहेगी, और जब नेमत का इन्कार करोगे तो ख़त्म हो जाएगी जो भी नेमत का शुक्र करता है उस शख़्स से बेहतर है जो सिर्फ नेमत से फाएदा उठाता है। अगर नेमत का शुक्र करोगे तो यक़ीनन तुम्हारी नेमत को बढ़ा देंगे लेकिन अगर नेमत का इन्कार किया तो हमारा अज़ाब बहुत ही सख़्त है।''

6— अमीरुलमोमिनीन अली (अ0) ने अपनी शहादत के वक़्त इमामे हसन (अ0) से फरमाया: ''ऐ मेरे बेटे! रसूले ख़ुदा ने हमको हुक्म दिया है कि तुमको अपना जानशीन बनाऊँ, अपने सहीफे व हथियार को तुम्हारे हवाले करूँ और जिस तरह आँहज़रत (स0) ने मुझे अपना वसी बनाया और अपनी किताब व हथियार हमारे हवाले किया और मुझ से तुम्हारे मुताल्लिक़ वसिय्यत की थी, तुम अपनी वफात के वक़्त यह चीज़ें अपने भाई हुसैन (अ0) के हवाले कर देना। यह आँहज़रत का हुक्म है।''

फिर आँहज़रत (अ0) ने अपनी सूरत हुसैन (अ0) की तरफ की और फरमाया कि: ''रसूले ख़ुदा (स0) ने हुक्म किया है कि तुम इसे मुहम्मद बिन अली (अ0) के फरज़न्द के हवाले करना और रसलू ख़ुदा (स0) का और मेरा सलाम कहना।''

यह रिवायात कुछ शरअी नुसूस में जो मुहम्मद बिन अली (अ0) और आपके बुज़ुर्ग बाप की इमामत पर दलालत करती हैं और आप (अ0) को अपने ज़माने का फिक्री व इज्तेमाअी मरजा क़रार देती हैं। (उसूले काफी जि–1 पे–305)

□□□